ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 183-185**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

विद्यार्थियों में विद्यालय समायोजन का उनकी सामाजिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन

डॉ0 आसुतोष कुमार तिवारी

सहायक आचार्य–शिक्षाशास्त्र विभाग, जी. डी. बिनानी पी. जी. कॉलेज, मीरजापुर (उ0प्र0) भारत

Received-12.12.2024, Revised-19.12.2024, Accepted-25.12.2024 **E-mail : ashutiwari0590@gmail.com**

सारांशः शिशु जन्म से न तो सामाजिक होता है और न ही असामाजिक बाद की परिस्थितियों के अनुसार उसमें सामाजिक या असामाजिक व्यवहार विकसित होता है। बालक का सामाजिक विकास ही उसकी सामाजिक बुद्धि का परिचायक होता है। सामाजिक बुद्धि दैनिक जीवन की विभिन्न सामाजिक एवं व्यावसायिक परिस्थितियों में सामंजस्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सामाजिक बुद्धि से युक्त व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ शीघ्रता व सुगमता से समायोजन कर लेता है, जबकि सामाजिक बुद्धि के अभाव में व्यक्ति को सामाजिक सम्बन्ध बनाने तथा उन्हें बनाए रखने में कठिनाई होती है। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की विद्यालय समायोजन क्षमता को जानने का प्रयास किया गया था। अध्ययन के उपरांत पाया गया कि जिन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि उच्च स्तर की थी, उनमें संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन भी उच्च स्तर का है। जिन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि निम्न स्तर की थी, उनमें संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन भी निम्न स्तर का है। विद्यार्थियों की विद्यालय समायोजन क्षमता लैंगिक भूमिका से पूर्णतया मुक्त थी क्योंकि उच्च सामाजिक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राएं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं से विद्यालय समायोजन बेहतर है।

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक बुद्धि, समायोजन, दैनिक जीवन,

प्रस्तावना– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका जन्म एक परिवार में होता है जो उसके प्राथमिक समाज का रूप लेता है। इसके बाद जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है उसके सम्पर्क में दूसरे व्यक्ति आते–जाते हैं और उसके समाज का दायरा विस्तृत होता जाता है। जन्म के समय शिशु में सामाजिकता लगभग शून्य होती है। जैसे–जैसे उसका शारीरिक तथा मानसिक विकास होने लगता है, वैसे–वैसे उसका समाजीकरण भी होने लगता है। वह अपने माता–पिता, परिवार के सदस्यों, संगी–साथियों तथा अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है जिसके परिणामस्वरूप वह सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं, रूढियों आदि के अनुरूप व्यवहार करना सीखता है तथा सामाजिक जगत में अपने को समायोजित करने का प्रयास करता है। इसमें व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन करता है, सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी आवश्यकताओं व रुचियों पर नियंत्रण करता है, दूसरों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है तथा अन्य व्यक्तियों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है। समाज में रह कर ही व्यक्ति दूसरों से सम्पर्क करता है, समाज के मूल्यों, विश्वासों तथा आदर्शों में आस्था रखने लगता है तथा समाज की जीवन–शैली को अपनाता है। उसमें सह–अस्तित्व की भावना आ जाती है, वह सामाजिक हित में तथा लोक कल्याण की भावना से अपने निहित स्वार्थों का त्याग करना सीख जाता है तथा सामाजिक गुणों को विकसित करके समाज में अनुकूलन स्थापित करने का प्रयास करता है, जो व्यक्ति ऐसा कर पाता है वह सामाजिक रुप से बुद्धिमान माना जाता है।

सामाजिक बुद्धि किसी सामाजिक परिस्थिति में व्यक्ति या समूह के साथ प्रभावी ढंग से निपटने की क्षमता है। यह वरिष्ठों और अधीनस्थों के साथ मिलकर काम करने की क्षमता को दर्शाता है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्वभाव होता है, कुछ सहानुभूतिपूर्ण, सौहार्दपूर्ण और सुखद होते हैं जबकि अन्य उदासीन और असहानुभूतिपूर्ण होते हैं। सामाजिक बुद्धिमत्ता अन्य व्यक्तियों, स्थितियों और पर्यावरण के साथ अच्छे समायोजन की गुणवत्ता को दर्शाती है। यह अलग–अलग स्वभाव के व्यक्तियों को समझने और उनके साथ व्यवहार करने की क्षमता है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **ई० एल० थॉर्नडाइक (E. L. Thorndike)** सामाजिक बुद्धि के सन्दर्भ में कहा कि "सामाजिक बुद्धिमत्ता मानवीय संबंधों में पुरुषों और महिलाओं, लड़कों और लड़कियों को समझदारी से समझने और प्रबंधित करने की क्षमता है।"

हमारा जीवन विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। बचपन से ही हमें जीवन की विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो जितने अच्छे ढंग से जीवन संघर्ष की इस लड़ाई को लड़ता है वह उतने ही अच्छे ढंग से सफलता के रास्ते पर प्रगति करता जाता है। मानव अपने जीवन में मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ चाहता है उसकी यही चाह उसे हर पर संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है। परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि जो हम चाहते हैं जिसके लिए हम दिन–रात परिश्रम करते हैं उस लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती है। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पाने हेतु कठिन परिश्रम करता है परन्तु इसके बाद भी उसे सफलता नही मिलती। ऐसे में वह अपने लक्ष्य को ही बदल देता है और बी. एससी. में प्रवेश लेकर आगे एम.एससी. एवं प्राध्यापक बनने की बात को पूरा करने में लग जाता है। एक क्षेत्र में असफलता के बाद अन्य किसी क्षेत्र का चुनाव करना, अपने लक्ष्य को अपनी योग्यता एवं परिस्थितियों के अनुसार घटा देना, इस प्रकार के परिवर्तित व्यवहार को ही समायोजन कहते हैं। समायोजन प्रक्रिया में व्यक्ति को प्रेरक एवं परिस्थिति दोनों के साथ सन्तुलन करना पड़ता है। **शेफर (Shaffer)** के अनुसार "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं एवं इन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के साथ सन्तुलन बनाए रखता है।"

समायोजन के आधार पर ही हम एक व्यक्ति के सम्बन्ध में यह पता लगाते है कि इसका व्यक्तित्व समायोजित है या नहीं। समायोजित व्यक्ति में व्यक्तित्व का सन्तुलन, तनाव की कमी एवं आवश्यकताओं एवं वातावरण में समन्वय जैसे लक्षण परिलक्षित होते हैं।

मानव एक बुद्धिमान प्राणी है। अतः वह अपनी आवश्यकताओं के प्रति स्वयं ही सचेत रहता है तथा वातावरण के साथ उचित सम्पर्क स्थापित करता है। प्रेरणा के जन्म के साथ ही व्यक्ति की मानसिक शान्ति प्रभावित होती है जिसके फलस्वरूप वह ऐसे कार्य करता है जिससे कि उस प्रेरणा की पूर्ति हो जावे । परन्तु प्रत्येक प्रकार की प्रेरणा की पूर्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि अनेक बाह्य एवं आन्तरिक कठिनाइयों के कारण इन प्रेरणाओं की सन्तुष्टि में बाधा उपस्थित होती है। व्यक्ति इन बाधाओं को दूर करने के लिए अन्य प्रकार के अप्रत्यक्ष साधनों का उपयोग करता है जिससे कि प्रेरणा या आवश्यकता की पूर्ति किसी न किसी प्रकार से हो जावे। जब

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

उसके प्रेरणा की पूर्ति हो जाती है या लक्ष्य सिद्ध हो जाता है तो उसे ऐसा अनुभव होता है कि मन का बोझ हल्का हो गया है। इस समायोजन प्रक्रिया से व्यक्ति के मानसिक जीवन को सन्तुष्टि प्राप्त होती है तथा वह पर्यावरण की तत्कालीन परिस्थितियों के बीच सामंजस्य अनुभव करने लगता है।

व्यक्ति अपने जीवन की परिस्थितियों में समायोजन हेतु रचनात्मक समायोजन (Constructive Adjustment), स्थानापन्न समायोजन (Substitute Adjustment) तथा मनोरचनाएँ (Mental Mechanism) जैसी विधियों को अपनाता है।

समस्या कथन : "विद्यार्थियों में विद्यालय समायोजन का उनकी सामाजिक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा –

सामाजिक बुद्धि : प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा सामाजिक मानकों के अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता से है। जिसे सामाजिक मापनी द्वारा मापा गया है।

उच्च सामाजिक बुद्धि : प्रस्तुत अध्ययन में उच्च सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य ऐसे छात्रों से है जिनका प्राप्तांक सामाजिक बुद्धि मापनी पर 71 या उससे अधिक है तथा छात्राओं का प्राप्तांक 68 या उससे अधिक हो।

निम्न सामाजिक बुद्धि : प्रस्तुत अध्ययन में निम्न सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य ऐसे छात्रों से है जिनका प्राप्तांक सामाजिक बुद्धि मापनी पर 60 या उससे कम हो तथा छात्राओं का प्राप्तांक 57 या उससे कम हो।

विद्यालय समायोजन : प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय समायोजन से तात्पर्य विद्यालीय परिस्थिति में संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थियों में प्रभावी समायोजन से है।

अध्ययन के उद्देश्य–

- विद्यार्थियों की उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि का अध्ययन करना।
- उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में विद्यालय समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।
- निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में विद्यालय समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की विद्यालय समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना. उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की विद्यालय समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमन.प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों तक सीमित है। प्रस्तुत अध्ययन में मीरजापुर जनपद में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

सम्बंधित साहित्य–गुप्ता, प्रियदर्शनी (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्र एवं छात्राओं दोनों का ही विभिन्न स्तरों पर आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सौन्दर्यात्मक व व्यक्तित्व समायोजन लगभग समान है।

यादव, बेगराज सिंह(2014) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में लैंगिक दृष्टि से सार्थक अंतर है। जिसमें शिक्षिकाओं का समायोजन शिक्षकों के तुलना में उच्च है।

शोध विधि–प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–प्रस्तुत अध्ययन में मीरजापुर जनपद में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन– प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में मीरजापुर जिले के अनुसूचित जनजाति वर्ग के उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत 60 उच्च सामाजिक बुद्धि एवं 60 निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया है।

प्रतिदर्श	छ
उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थी	60
निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थी	60

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणरू प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु निम्नांकित उपकरणों का उपयोग किया गया है दृ सामाजिक बुद्धि से सम्बंधित आंकड़ों के संकलन हेतु डॉ. एस. माथुर द्वारा निर्मित 'सामाजिक बुद्धि मापनी' तथा विद्यालय समायोजन से सम्बंधित आंकड़ों के संकलन हेतु ए. के. पी. सिन्हा एवं आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित Adjus tment Inventory for School Student (AISS).

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी रू प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु उनकी प्रकृति के अनुरूप मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात की गणना की गयी है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या– उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों के AISS पर आये प्राप्तांकों की तुलना सारणी

समायोजन के	उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थी		निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थी		क्रांतिक–अनुपात
आयाम	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	मान
संवेगात्मक	6.11	2.31	9.82	2.73	8.07
सामाजिक	6.85	1.98	10.07	2.28	8.05
शैक्षिक	7.08	2.63	9.78	2.17	6.43
कुल	20.05	6.67	29.63	7.09	7.60

(df = N1 + N2 – 2 = 60 + 60 – 2 = 118), Significant, α = .01

उपर्युक्त तालिका में उच्च तथा निम्न सामाजिक बुद्धि वाले वाले विद्यार्थियों के AISS पर आये प्राप्तांकों का क्रांतिक–अनुपात मान क्रमशः 8.07 (संवेगात्मक समायोजन), 8.05 (सामाजिक समायोजन), 6.43 (शैक्षिक समायोजन) 7.60 (सभी आयामों पर कुल समायोजन) है, जो कि सभी परिगणित क्रांतिक–अनुपात मान एकपुच्छीय सार्थकता परीक्षण में 118 (df) स्वतंत्रता के अंश पर .01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.36 से अधिक है, इसलिए परिगणित क्रांतिक–अनुपात मान सार्थकता स्तर .01 पर सार्थक है। अतः परीक्षण हेतु बनायी गयी शून्य परिकल्पना, उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की विद्यालय समायोजन क्षमता में कोई

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

सार्थक अंतर नहीं है।, .01 सार्थकता स्तर पर निरस्त हो जाती है। ऐसे में समूहों के मध्यमानों के बीच दिख रहे अंतर को केवल संयोगवश नहीं माना जाएगा।

यहाँ शून्य परिकल्पना के अस्वीकार होने का आशय है कि उच्च तथा निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की 'विद्यालय समायोजन क्षमता समान नहीं हैं। इसके साथ ही दोनों समूहों के मध्यमानों से स्पष्ट है कि उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की विद्यालय समायोजन क्षमता तुलनात्मक रूप से निम्न शैक्षिक सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों से बेहतर हैं, जो कि आने वाले समय में उनके कॅरियर के लिए भी लाभप्रद होगी।

निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ- प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अध्ययन में विद्यालय समायोजन के एक प्रभावी कारक के पता लगाने के उद्देश्य से विद्यार्थियों की सामजिक बुद्धि को एक स्वतन्त्र चर के रूप में प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श में शामिल विद्यार्थियों उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि के दो समूहों में विभाजित हैं, जिन्होंने AISS (Adjustment Invetory for School Students) पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। AISS में समायोजन के तीन आयाम (संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन व शैक्षिक समायोजन) हैं। अध्ययन से प्राप्त विश्लेषण से जो परिणाम प्राप्त हुए हैं, वे इस प्रकार है –

- जिन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि उच्च स्तर की थी उनमें संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन भी उच्च स्तर का है।
- जिन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि निम्न स्तर की थी उनमें संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन भी निम्न स्तर का है।
- विद्यार्थियों की विद्यालय समायोजन क्षमता लैंगिक भूमिका से पूर्णतया मुक्त थी, क्योंकि उच्च सामाजिक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राएं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले छात्र एवं छात्राओं से विद्यालय समायोजन बेहतर है।

सामाजिक विकास भी बालक में होने वाले विकास के अन्य पक्षों (शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक ...आदि) की तरह महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसके आभाव में व्यक्ति अपना सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन कुशलतापूर्वक व्यतीत करना कठिन होता है, इसके द्वारा ही वह दूसरों से सही व्यवहार करता है और उन्हें आकर्षित करता है। जैसा कि प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया है कि उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में विद्यालयी समायोजन तुलनात्मक रूप से अच्छा है। अतः शैक्षिक दृष्टि से भी बालक का सामजिक विकास महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष से प्राप्त शैक्षिक निहितार्थ आधोलिखित हैं –

- बालक के सामाजिक विकास में सबसे पहली एवं महत्वपूर्ण भूमिका उसके परिवार की होती है। इसलिए पारिवारिक सदस्यों को उसके सामाजिक विकास में उचित सहभागिता निभानी चाहिए।
- छोटे परिवार में बच्चों को माता–पिता से अधिक प्रेम व स्नेह प्राप्त होता है। जो कि उनके सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है।
- परिवार के बाद पास–पड़ोस बच्चे के सबसे करीब होता है। अतः बच्चे का सामुदायिक वातावरण स्वस्थ होना चाहिए जहाँ पर वह अपने साथी–संगी भी बनाता है।
- शिक्षकों तथा विद्यालय के अन्य कर्मचारियों को विद्यार्थियों से प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए तथा उसकी जिज्ञासाओं का आदर करना चाहिए। जिससे कि विद्यालय और अध्ययन तनावपूर्ण न लगे।
- सामाजिक बुद्धि अर्जित होती है। इसलिए बालक जितनी अधिक अंतक्रिया करेगा उसका सामाजिक विकास उतना सुदृढ़ होगा। अतः बालक को अधिक से अधिक इसके अवसर मिलने चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भटनागर, ए. बी. एवं भटनागर, मीनाक्षी (2013) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ.
2. कपिल, एच. के. (2009) सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
3. गैरेट, एच. ई. (2011) मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नोएडा.
4. गुप्ता, एस. पी. व गुप्ता, अलका (2012) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद.
5. सिंह, ए. के. (2013) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना.
6. सिंह, ए. के(2013) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना.
7. गुप्ता, एस. पी. व गुप्ता, अलका (2023) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज.

*****